Volume-9, No. 1 Feb.-2022, pp. Hin.09-12

शिक्षक प्रक्षिशण बी.एड. एक और दो वर्षीय पाठयक्रम में प्रशिक्षित प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. वीरेन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कालिज अनूपशहर बुलन्दशहर उ.प्र. भारत
चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ उ.प्र. भारत।

सार–
शिक्षक प्रक्षिशण बी.एड. एक और दो वर्षीय पाठयक्रम में प्रशिक्षित प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के सन्दर्भ में अंतर देखने के लिए यह तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध कार्य का उद्देश्य शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की गुणवत्ता तथा उससे शिक्षण दक्षता और प्रभावशीलता में आने वाले परिवर्तनों को जानना है। शिक्षण दक्षता में ज्ञान, कौशल और मूल्य शामिल होते है जो किसी भी शिक्षण शिक्षा पाठ्यक्रम की सफलतापूर्वक समापन के द्वारा ही प्राप्त किये जा सकते है। किसी भी शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता का अर्थ उसकी शिक्षण प्रक्रिया से प्राप्त छात्रों का संतुष्टि स्तर, छात्रों की सफलता का स्तर, विशिष्ट एवं शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के स्तर से है। इसलिए शोध कार्य में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की दक्षता और प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। अनुसंधान कर्ता ने प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद मंडल (मुरादाबाद, रामपुर, बिजनौर, अमरोहा, और सम्भल) के विद्यालयों से 400 प्राथमिक शिक्षकों का यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में चुना हैं। प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण तुलनात्मक रूप से किया गया है।

मुख्य शब्द– शिक्षण दक्षता, शिक्षण प्रभावशीलता, बी.एड. एक वर्षीय, बी0एड0 द्विवर्षीय

प्रस्तावना

मानव के रूप में शिक्षक और व्यवसाय के रूप में शिक्षक कार्य संसार में सर्वोच्च माने जाते हैं। शिक्षक ही अपने ज्ञान और अनुभवों के आधार पर आने वाली भावी पीढ़ी को ज्ञान का सही सृजन कराता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शिक्षक को ऐसी अनुदेशनात्मक तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए जिससे बच्चों को सीखने की प्रेरणा मिल सके प्रभावशाली एवं दक्ष शिक्षक सदैव शिक्षार्थियों की योग्यताओं को ध्यान में रख कर अधिगम की विभिन्न क्रियाओं को निर्धारित करता है। कक्षा एक ऐसा स्थान है जहाँ भिन्न भिन्न संस्कृतियों, योग्यताओं और क्षमताओं वाले बच्चे होते है और इन सभी कारकों को ध्यान में रख कर शिक्षा प्रदान करने के लिए एक निपुण, कुशल और प्रभावी शिक्षक की आवश्यकता होती है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्नत भौतिक सुविधाएँ शिक्षण तकनीकें आदि शिक्षक की प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक होती है परन्तु ये प्रभावी शिक्षक का स्थान कभी नहीं ले सकती, शिक्षा की प्रक्रिया में प्रभावी शिक्षक का महत्व निर्विवाद है। एक प्रभावी शिक्षक शिक्षार्थियों के जीवन में अमिट छाप छोड़ता है और उनके व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने का प्रयास करता है और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक होता है। वर्तमान समय में शिक्षण में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है इसलिए ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो शिक्षण कार्यों में निपुण हो, जिनका शिक्षण प्रभावशाली हो और जिनमे शिक्षण के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रवृति हो।

वर्तमान अध्ययन में शैक्षिक अनुसन्धान के दो चरों को समिल्लित किया गया है। इस खंड का उद्देश्य शिक्षण प्रभावशीलता और शिक्षण दक्षता को व्यापक स्तर पर दर्शाना है जिसके माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता का पता लगाया जा सके सामान्य रूप से शिक्षण प्रभावशीलता और शिक्षण दक्षता को एक सामान समझा जाता है। इनके प्रभाव का इस बात से मूल्यांकन लगाया जाता है कि शिक्षार्थियों की अधिगम शैली किस प्रकार की रही है। शिक्षण का प्रभावशाली होना बहुत से कारकों पर निर्भर करता है जैसे विद्यालय का वातावरण, शिक्षक का व्यवहार, पाठ्यक्रम, छात्र की योग्यता, मूल्यांकन की विधियां आदि। गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षकों में शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता जैसे गुणों का होना अनिवार्य है।

बी0 एड0 एक वर्षीय– शिक्षकों की शिक्षा से सम्बंधित एक वर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम पूर्व में चलाया जाता था। जिसके फलस्वरूप अनेक शिक्षक वर्तमान में

शिक्षण कार्य कर रहे हैं। बी0 एड0 एक वर्षीय पाठ्यक्रम प्रवेश राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, विश्वविद्यालय नियमानुसार एवं मानकों के अनुसार होता था तथा इसके लिए छात्र को स्नातक करना अनिवार्य था, इस पाठ्यक्रम की अवधि एक वर्षीय थी। इस पाठ्यक्रम से सम्बन्धित शिक्षक वर्तमान में प्राथमिक विद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत हैं।

बी0एड0 द्विवर्षीय– बी0एड0 पाठ्यक्रम में गुणात्मक सुधार करते हुए बी.एड. एक वर्षीय पाठ्यक्रम को बी. एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में परिवर्तित कर दिया गया है। वर्तमान में बी0एड0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम ही संचालित है। इसमें प्रवेश राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, एवं विश्वविद्यालय नियमानुसार ही होता है। यह पाठ्यक्रम भी शिक्षकों की शिक्षा के लिए है। इसमें प्रवेश लेने के लिए–छात्र को स्नातक उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। इस पाठ्यक्रम से सम्बन्धित शिक्षक वर्तमान में प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत हैं।

प्रभावकारिता एवं दक्षता से शिक्षक कौशल, ज्ञान और कुशलता जुडी होती हैं। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए ही शोधकर्ता ने इस समस्या का चयन किया है। शोधकर्ता ने यह भी पाया कि पहले इस प्रकार का कोई भी शोध नहीं किया गया जिसमें शिक्षक प्रशिक्षक पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण शिक्षकों का अध्ययन हो। इसलिए प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0 एड0 एक वर्षीय और बी0 एड0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षक प्रशिक्षक पाठ्यक्रम के अंतर्गत तुलनात्मक समस्या का इस शोध के लिए चयन किया गया।

शोध उद्देश्य

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी. एड. एक वर्षीय और बी. एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी. एड. एक वर्षीय और बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.एड. एक वर्षीय और बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.एड. एक वर्षीय और बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

विधिः अनुसंधानकर्ता ने प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसँख्याः प्रस्तुत शोध पत्र में जनसँख्या में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद मंडल (मुरादाबाद, रामपुर, बिजनौर, अमरोहा, और सम्भल) के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त प्राथमिक शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श–

मुरादाबाद मंडल के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक			
नगर / शिक्षक	अध्यापक	अध्यापिकाएं	कुल
शहरी	100	100	200
ग्रामीण	100	100	200
कुल	200	200	400

प्रस्तुत शोध प्रबंध में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद मंडल के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों से 400 प्राथमिक शिक्षकों का यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है। जिसमें 200 अध्यापक तथा 200 अध्यापिकाओं का चयन किया गया है। जिसमे 100 अध्यापक ग्रामीण तथा 100 अध्यापक शहरी एवं 100 अध्यापिकाएं शहरी तथा 100 अध्यपिका ग्रामीण है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शिक्षण दक्षता के मापन हेतु अनुसंधानकर्ता ने डॉ बी. के. पासी एवं डॉ एम. एस. ललिता द्वारा निर्मित नामक मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है। डॉ0 प्रमोद कुमार और डॉ0 डी0 एन0 मूथा द्वारा निर्मित शिक्षण–प्रभावशीलता मापनी नामक परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

परिणाम एवं विवेचना

परिकल्पना 1: प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0एड0 एक वर्षीय और बी0एड0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका क्रमांक–1

चर	कुल संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी
बी0एड0 एक वर्षीय	200	102.47	10.60	**5.25**
बी0 एड0 द्विवर्षीय	200	95.35	8.97	

तालिका क्रमांक 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0 एड0 एक वर्षीय और बी0 एड0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर होता है। उपरोक्त आकड़ों के अध्ययन से पाया गया कि बी0एड0 एक वर्षीय और बी0एड0 द्विवर्षीय उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान क्रमशः 95.35 एवं 102.47 है और प्रमाणिक विचलन क्रमशः 10.60

एवं 8.97 है और इनका तुलनात्मक मान 5.25 हैं। यह तुलनात्मक मान सार्थकता के स्तर 0.01 तथा 0.05 स्तर से अधिक है जो दर्शाता है कि बी0एड0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता बी0एड0 एक वर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों से अधिक है। दक्षता के तत्वों के आधार पर द्विवर्षीय उत्तीर्ण शिक्षकों का योजना बनाने का तरीका, प्रस्तुतीकरण और मूल्यांकन करने का तरीका एक वर्षीय उत्तीर्ण शिक्षकों से बेहतर पाया गया। व्यावहारिक तौर पर उनके पास ज्यादा विधियों एवं तकनीकों का भंडार है जो उन्हें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अधिक दक्ष बनाता हैं। अतः इस प्रकार शून्य परिकल्पना ''प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0एड0 एक वर्षीय और बी0एड0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।'' अस्वीकृत सिद्ध होती है।

परिकल्पना 2: प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0 एड0 एक वर्षीय और बी0एड0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका क्रमांक–2

चर	कुल संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी
बी0एड0 एक वर्षीय	200	98.77	11.59	**7.24**
बी0एड0 द्विवर्षीय	200	108.43	6.92	

तालिका क्रमांक 1.2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0एड0 एक वर्षीय और बी0एड0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर होता है। उपरोक्त आकड़ों के अध्ययन से पाया गया कि बी0एड0 एक वर्षीय और बी0एड0 द्विवर्षीय उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान क्रमशः 98.77 एवं 108.43 है और प्रमाणिक विचलन क्रमशः 11.59 एवं 6.92 है और इनका तुलनात्मक मान 7.24 हैं। यह तुलनात्मक मान सार्थकता के स्तर 0.01 तथा 0.05 स्तर से अधिक है जो दर्शाता है कि बी0एड0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता बी0एड0 एक वर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों से अधिक है। प्रभावशीलता के विभिन्न आयाम दर्शाते है कि द्विवर्षीय शिक्षक शैक्षिक, व्यावसायिक, सामाजिक, नैतिक और व्यक्तित्व रूप से अधिक प्रभावी हैं। एक वर्षीय शिक्षकों में भी इन आयामों को देखा जा सकता है परन्तु आकड़ों के आधार पर द्विवर्षीय शिक्षकों में इनका प्रभाव अधिक है। इस कारण से द्विवर्षीय शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया को और प्रभावशाली बना पा रहे है। अतः इस प्रकार शून्य परिकल्पना ''प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0एड0 एक वर्षीय और बी0एड0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।'' अस्वीकृत सिद्ध होती है।

निष्कर्ष

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एक शिक्षक के बिना अधूरी होती है और शिक्षक का हर प्रारूप में दक्ष होना और प्रभावी होना इसे और सफल बना देता है। शिक्षक जितना ज्यादा दक्ष एवं प्रभावी गुणों से सम्पूर्ण होगा उतना ही छात्रों में उचित गुणों का संचार कर पायेगा। प्राथमिक शिक्षा बालक की औपचारिक शिक्षा का प्रथम स्तर है। प्राथमिक शिक्षा की यह शिक्षा मानव की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार सामाजिक ढंग से की जाये, इसके लिए व्यक्ति को तैयार करती है। इसलिए शिक्षण का प्रभावशाली होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि प्राथमिक शिक्षा के साथ विद्यार्थी का भविष्य जुड़ा हुआ है और इसमें शिक्षण प्रभावकारिता और दक्षता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रस्तुत अध्ययन से यह पता चलता है कि एक वर्षीय शिक्षकों की तुलना में द्विवर्षीय पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण शिक्षक अपने कार्यों में अधिक निपुण है। इसका कारण उनका अधिक प्रशिक्षण समय, पाठ्यक्रम का अधिक समय तक चलना और प्रस्तुतीकरण में ज्यादा ध्यान देना हो सकता है। द्विवर्षीय पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण शिक्षकों में योजना, प्रस्तुतीकरण और मूल्यांकन को लेकर नयी विधियों और तकनीकों का समन्वय देखा जा सकता है। उनका शिक्षण कार्य केवल व्याख्यान विधि तक सीमित नहीं है। वे नए नए प्रयासों को करने में अधिक रूचि दिखाते है। जबकि एक वर्षीय पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण शिक्षक भी अपने आप में दक्ष है परन्तु कहीं न कहीं उनकी दक्षता और प्रभावशीलता द्विवर्षीय शिक्षकों से कम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **एंडरसन लॉरिन**. इंक्रीसिंग टीचर इफेक्टिवनेस, एडिशन पेरिस यूनेस्को
2. **ब्लेस, जोसफ** 1992 ''ब्रिंगिंग आउट द बेस्ट इन टीचर्स'' कॉलिफोर्निआ, कोरवीन प्रेस
3. **बुचबर्गर, एफ**– एटसेक्टरा– हाई क्वॉलिटी टीचर एजुकेशन फॉर हाई क्वॉलिटी ट्रेनिंग एंड एजुकेशन– यूमे, स्वीडन
4. **फील्ड लोरी** 1991– ट्रेनिंग फॉर कॉम्पेटेन्सी, लंदन, कोगन प्रेस
5. Flanders, N.A., & Simon. (1969). Teaching Effectiveness. A Review of Research, 1960-66. In R.L. Ebel (Ed.). Encyclopaedia of Educational Research, Chicago.

6. Gordon, Lynn Melby. (2001). High teacher efficacy as a marker of teacher effectiveness. Domain of Classroom Management. Retrieved on September 17, 2008 from www.Eric.com.
7. Muijs, D. and Reynolds, D (2005). Effective teaching: evidence and practice, 2nd edit. SAGE Publication Ltd. London, UK.
8. Raju, Boundu, G., & Viswanathappa. (2006). Teaching competency of primary school teachers with various qualifications. Edutracks, 5(12), 46-48.
9. **Amandeep and Gurpreet** (2005). A study of teacher effectiveness in relation to teaching competency- Recent Researches in Education and Psychology- 71(6), 137-140.